LOOK N LEARN
Children's Jain MAGAZINE

Rs. 5.00/-

25th July 2019 Every Fortnight I English, Hindi & Gujarati

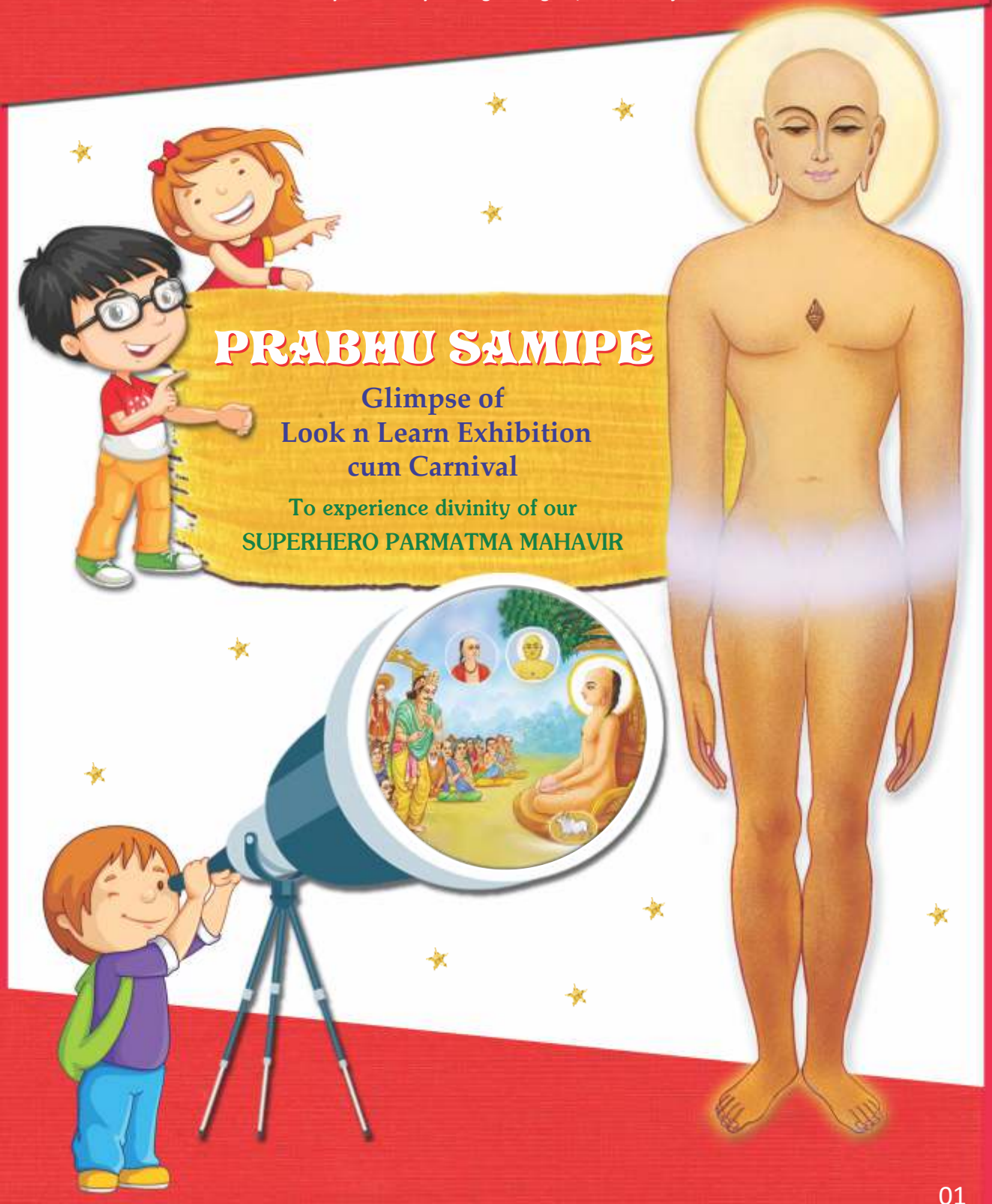

PRABHU SAMIPE

Glimpse of Look n Learn Exhibition cum Carnival

To experience divinity of our
SUPERHERO PARMATMA MAHAVIR

Year - 12, Vol: 13, Issue: 12, Date: 25.07.2019
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

"प्रभु समीपे"

- Gurubhakt Mehta Parivar

My Super Hero - My Mahavir

An Enlightened soul who was born as a human being and attains salvation through intense Meditation.
Begin your journey of becoming Parmatma Mahavir by entering His Magical world. Come and have glimpse of
LnL exhibition - Prabhu Samipe

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

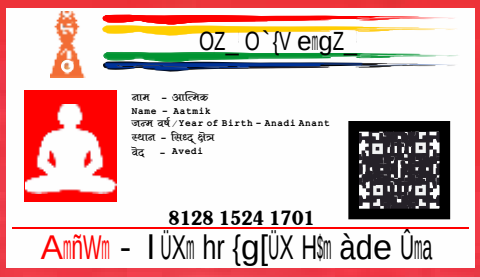

प्यारे बच्चों, क्या हमने जाना है प्रभु महावीर के जीवन चरित्र को?

बच्चों, प्रभु ने जो मार्ग अपनाया है उसी मार्ग पर हमें चलना है। प्रभु जिस जगह पर बिराजित हैं, उस मोक्ष स्थान का हमारा भी लक्ष्य है! मोक्ष के आरक्षण के लिए हमें समर्पण कार्ड और आस्था कार्ड की जरुरत है।

शानदार जीवनशैली के लिए है स्मार्ट कार्ड लेकिन प्रभु जैसी जीवनशैली के लिए है समर्पण कार्ड!

तीर्थंकर नामकर्म के २० बोल

(1) अरिहंत पद
(2) सिध्ध पद
(3) प्रवचन पद
(4) गुरु पद
(5) स्थवीर पद
(6) बहुश्रुत पद
(7) तपस्वी पद
(8) ज्ञान पद
(9) दर्शन पद
(10) विनय पद
(11) आवश्यक पद
(12) शील पद
(13) ध्यान पद
(14) तप पद
(15) दान पद
(16) वैयावच्च पद
(17) समाधि पद
(18) अभिनव ज्ञानपद
(19) श्रुतभक्ति पद
(20) तीर्थं प्रभावना

परमात्मा महावीर ने अपनी डिवाईन यात्रा की शुरुआत नयसार के भव में की थी। सुपात्र दान देकर उन्होंने सम्यक् दर्शन (समकित) प्राप्त किया।

नंदन राजर्षी के २५ वे भव में परमात्मा ने २० बोल की आराधना की और तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया।

जो परमात्मा का अतीत था वह हमारा वर्तमान है। जो परमात्मा का वर्तमान है वह हमारा भविष्य बन सकता है।

२० बोल की आराधना यह तीर्थंकर बनने का वीझा है।

रेवती श्राविका - सुलसा श्राविका

रेवती श्राविका : श्रावस्ती नगरी से विहार करके प्रभु मेंढिय गाँव में पधारे। तेजोलेश्या के कारण प्रभु के शरीर पर दाहज्वर शुरु हुआ था। तब रेवती श्राविका ने उत्कृष्ट भाव से बीजोरा पाक व्होराया।

ऐसे उत्कृष्ट भाव से सुपात्र दान व्होराने से रेवती श्राविका ने तीर्थंकर नामगोत्र कर्म बंध किया।

सुलसा श्राविका : सुलसा सती का चलना, बोलना सब निराला था। वह हर वक्त परमात्मा का स्मरण करती थी। उसके रोम रोम में प्रभु महावीर बसे थे। एक दिन अंबड संन्यासी ब्रह्मा, शिव आदि के रुप धारण करके सुलसा सती के पास आये। पर सुलसा उनके दर्शन के लिए नहीं जाती है। अंत में अंबड ने प्रभु महावीर का रुप लिया तब सुलसा ने कहा यह मेरे परमात्मा नहीं हैं क्योंकि अगर प्रभु स्वयं पधारते तो सुलसा सती का रोम रोम पुलकित आनंदित हो जाता। यह थी सुलसा की सच्ची भक्ति।

सुलसा सती की प्रभु महावीर के प्रति अटूट श्रध्धा और सच्ची भक्ति देखकर अंबड संन्यासी कि आँखो में आँसू आ गए।

जीवदया

दया के सागर प्रभु महावीर, करुणा प्रेमी प्रभु महावीर!

हमारे वीर प्रभु करुणा के सागर थे। एकेन्द्रिय जीव के प्रति भी दया रखते थे। हमें भी हर एक छोटे से छोटे जीव की रक्षा करनी चाहिए... **No hit no hurt only love!!!**

दानवीर और परोपकारी

एक बार शाही महल में सिंहासन पर महाराजा सिद्धार्थ अपने पुत्र बाल महावीर को गोद में लिए बैठे थे। प्रभु महावीर ने एक गरीब को देखकर स्मित बरसाया। यह देखकर राजाने तुरंत सैनिक को निर्देश दिया कि उस गरीब को दान दिया जाए। वह गरीब बोला, "यह बालक देव अवतार हैं, दया के सागर है उनकी एक मुस्कान से हमारी जीवन भर की गरीबी दूर हो गई"।

प्रभु वीर परोपकारी, दयावान और करुणावान थे।

हम उनके जैसे कब बनेंगे?

अहिंसाभाव

करुणासागर

प्रभु महावीर के अहिंसाभाव का अदभूत प्रभाव : एकबार जंगल में प्रभु महावीर ध्यान कर रहे थे और थोडी दूर एक हिरन बैठा था। अचानक से एक शेर शिकार के लिए दौड़ा। हिरण, प्रभु महावीर के पैंरो के पास जाकर बैठ गया। जैसे ही शेर प्रभु महावीर के पावन चरणों के पास पहुँचा, भगवान के पोझीटीव वायब्रेशन्स से शेर के हिंसा के भाव खत्म हो गए और वह शांत हो गया।

"अहिंसा परमो धर्म"

महावीर स्वामी के पास आनेवाले सभी जीव शांति का अनुभव करते थे।

करुणासागर : एक दिन बालप्रभु चिड़िया से बातचीत कर रहे थे। बालप्रभुने अपनी माँ से कहा, "चिड़िया शिकारी से खूब भयभीत है और मैंने उसे आश्वासन दिया है कि अब डरने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि अब से राजा सिध्धार्थ की नगरी में कोई किसीका शिकार नहीं करेगा"।

प्रभु महावीर के मन में पशु पक्षी के प्रति भी उतना ही करुणाभाव था जितना मनुष्य की प्रति था। ऐसे करुणावान थे हमारे प्रभु!

प्रभु ना पगले

प्रभु ना पगले : प्रभु महावीर गंगा नदी के किनारे ध्यान साधना करने जा रहे थे। प्रात:काल का समय था। जैसे जैसे प्रभु आगे बढ़ रहे थे वैसे उनके पैरों के निशान मिट्टी पर उठकर आ रहे थे। पुष्पामित्र नाम का एक नाविक वहाँ से गुजर रहा था। तब उसने वहाँ मिट्टी पर प्रभु के चरणों के निशान देखे और सोचने लगा कि यह किसी चक्रवर्ती के पैरों के निशान हैं।

प्रभु को साधु के वेश में नाविक पहचान नहीं पाया। तब उसे आकाशवाणी सुनाई दी। आकाशवाणी ने नाविक को बताया कि तुमने जो पैरों के निशान देखे है वह चक्रवर्ती के नहीं परंतु चक्रवर्ती के भी चक्रवर्ती, धर्मचक्रवर्ती प्रभु महावीर स्वामी के है। यह सुनकर नाविक के खुशी का ठिकाना न रहा और उसने प्रभु महावीर को नमस्कार किया और अपने आप को बहुत धन्यवान समझा। वापिस लौटते समय नाविक प्रभु के चरणों को देखकर आगे बढ़ रहा था और अचानक उसे प्रभु के चरणों के निशान पर रत्नो का भंडार मिला जिसे पाकर नाविक भाग्यवान हो गया। नाविक को ऐसा अनुभव हुआ कि महापुरुषों के दर्शन कभी भी व्यर्थ नहीं जाते।

हमने देखा कि, प्रभु के दर्शन मात्र से ही कितना लाभ होता है अगर हम उनके पथ पर चले तो हमारी आत्मा का भी कल्याण होगा।

ऋणानुबंध

ऋणानुबंधः गौतम स्वामी ने एक किसान को अहिंसा धर्म का उपदेश देकर प्रतिबोधित किया। उस किसान ने गौतम स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की और वे दोनों प्रभु महावीर के दर्शन के लिए पहुँचे। वहाँ पहुँचकर किसान मुनि प्रभु महावीर को देखकर बोले, "अगर यही आपके गुरु है, तो मुझे यहाँ नहीं रहना" और वह स्थान छोड़कर चले जाते है।

यह देखकर परमात्मा बोले, "त्रिपृष्ठ वासुदेव के भवमें मैंने जिस शेर को मारा था, उसका जीव ये किसान है। उस वक्त की मेरी क्रुरता के कारण वह अब तक भयभीत है। उस भव में आप गौतम स्वामी मेरे रथ के सारथी थे। जब वह शेर अपनी अंतिम साँस ले रहा था तब आपने उसपर करुणा बरसाई थी इसलिए इस भवमें किसान को आपके प्रति सद्भाव है"।

यह सुनकर गौतम स्वामी बोले "प्रभु, आप पहेले से जानते थे कि वह दिक्षा छोड़कर जानेवाले है, तो उनको प्रतिबोधित करने के लिए मुझे क्यों भेजा?"

प्रभु बोले, "गौतम आपके प्रतिबोध से उन्हें समकित कि प्राप्ति हुई है, अब वह फ्रिर से धर्म को प्राप्त करेंगे और मोक्षगामी बनेंगे"।

च्यवन कल्याणक
जन्म कल्याणक

च्यवन कल्याणकः तीर्थंकर प्रभु के जीवन की घटना तीन लोक के कल्याण का कारण होने से उसे कल्याणक कहते हैं।

प्रभु महावीर का भरत क्षेत्र में देवानंदा माता की कुक्षी में च्यवन होता है। महान आत्मा का जन्म क्षत्रिय कुल में ही होता है, ब्राह्मण कुल में नहीं। देवानंदा माता ब्राह्मण कुल से थी। इस हेतु से हरिणगमेषी देव ने प्रभु को देवानंदा माता के गर्भ से माता त्रिशला देवी के गर्भ में स्थानांतरण कर दिया।

जन्म कल्याणकः चैत्र सुद तेरस के शुभ दिन को प्रभु के जन्म की घोषणा देवों के राजा इन्द्र शकेन्द्र करते हैं। देवलोक के ६४ इन्द्र और ५६ दिक्कुमारीयाँ प्रभु का जन्मोत्सव मनाते है। शकेन्द्र प्रभु को मेरुपर्वत पर ले जाते हैं और प्रभु का जन्म अभिषेक करते हैं।

दीक्षा कल्याणकः लोक कल्याण कि भावना से धर्मतीर्थ प्रवर्तन के लिए प्रभु ने अपने भाई की आज्ञा से दिक्षा लेने का निश्चय किया। दिक्षा लेने से पहले एक साल प्रभु ने वर्षीदान दिया। प्रभुने पंचमुष्टि लोच स्वयं ही किया और वे स्वयं दिक्षीत हुए। दिक्षा लेते ही उन्हें मनःपर्यवज्ञान प्रगट हुआ। प्रभुने दिक्षा लेने के बाद 12½ वर्ष तक ध्यान और साधना की और कर्मो को क्षय किया।

केवलज्ञान कल्याणकः प्रभु महावीर विहार करके ऋजुवालिका नदी के किनारे पहुँचे। नदी के किनारे शालवृक्ष के नीचे प्रभु गोदोहिका आसन में शुक्लध्यान में लीन हो गए। प्रभु के ४ घातीकर्म : ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय कर्म क्षय हो गए और प्रभु महावीर को केवलज्ञान प्रगट हुआ।

निर्वाण कल्याणकः प्रभु का अंतिम चातुर्मास पावापुरी नगरी में था। आसो वद अमास की रात प्रभु देशना देते देते मौन हो गए। ४ अधाती कर्म क्षय हो गए और प्रभु मोक्षगामी बन गए। प्रभु अनंत सिध्ध भगवंत के साथ सिध्धशिला में अनंत आत्मिक सुख में बिराज रहे हैं।

दीक्षा कल्याणक

केवलज्ञान कल्याणक

निर्वाण कल्याणक

मिथिला नगरी : जिनदेव नामक सार्थवाह प्रभु के परम उपासक थे। जिनदेव किराटराज के पास बहुत मूल्यवान रत्न और किंमती वस्त्र लेकर गए। यह देख वह अत्यंत खुश हो गए। ऐसे रत्न कहाँ मिलते है? जिनदेवने कहा, "मेरे मिथिला देश में इनसे भी सुंदर रत्न मिलते हैं"।

जिनदेव, किराटराज को प्रभु महावीर के समवसरण में ले जाते है। प्रभु की सौम्यता, प्रसन्नता देख किराटराज प्रसन्न होकर बोले, "क्या आप रत्नो के बड़े व्यापारी हो?" प्रभु ने उनको धर्मोपदेश दिया। द्रव्यरत्न ओर भावरत्न के बीच का अंतर समझाया। प्रभु की वाणी किराटराज के अंतर को छू गई और वह प्रभु के पास दिक्षित हो गए।

नालंदा नगरी

नालंदा नगरी : नालंदा नगरी में मद्रुक श्रावक ने उदाहरण द्वारा संन्यासी को समझाया कि हम सब छदमस्थ है हम जो देख सकते है वह अल्प है।

केवली भगवंत अनंतज्ञानी है!

उनको ज्ञान से सब कुछ दिखाई देता है। संन्यासी को अधिक जानने की इच्छा हुई और चातुर्मास में सभी संन्यासीओने प्रभु से प्रश्नोत्तरी की और उनसे समाधान प्राप्त किया।

क्या आपको जानना है कि वह कौनसी प्रश्नोत्तरी थी तो आओ LNL Exhibition, Parle में 27th & 28th July को।

हस्तिपाल राजा

हस्तिपाल राजाने सिध्ध पद की आराधना करके तीर्थंकर नामकर्म का बंध कीया था। उन्होंने द्रढ़ अभिग्रह किया था कि जब तक उन्हें सिध्ध परमात्मा के दर्शन न हो तब तक वे आहार न लेंगे। ऐसे द्रढ़ अभिग्रह सुनकर इन्द्र देव कि सभा में अन्य देवों को परिक्षा लेने कि इच्छा हुई। देव हस्तिपाल राजा को उपसर्ग देने लगे लेकिन वह चलित नहीं हुए। उनके रोम रोम में सिध्ध परमात्मा का स्मरण था। सम्मेत शिखर पर सिध्ध भगवंतो को वंदन करके उन्होंने पारणा कर अपना द्रढ़ अभिग्रह संपन्न किया।

✳ उपसर्ग ✳

उपसर्ग आए... उपसर्ग आए... उपसर्ग आए... है,
प्रभु महावीर को साधना काल में उपसर्ग आए... हैं।
उपसर्ग आए... उपसर्ग आए... मनुष्य, तिर्यंच, देवता के उपसर्ग आए हैं...
चलित न हुए, चलित न हुए हैं, समभाव से, सहनशीलता से प्रभु कर्म क्षय करते हैं,
प्रभु को उपसर्ग आए हैं... प्रभु को परिषह आते हैं...

Place	Upsarg
०१) कर्मारगाम	गोवाल का उपसर्ग
०२) अस्थिक गाम	शूलपाणि यक्ष का उपसर्ग
०३) उत्तरवाचाला नजीक	चंडकौशिक सर्प का उपसर्ग
०४) सुरभिपुर	सुद्रष्ट्र देव का उपसर्ग
०५) चोराक	कुए में गिराया
०६) कलंबुका	रस्सी से मारा
०७) लाढभूमि	अनार्य प्रदेश में उपसर्ग
०८) कुपिका सन्निवेश	मार मारा (हानी पहुँचाई)
०९) शालिशीर्ष	कटपूतना व्यंतरी देवी का उपसर्ग
१०) लोहगला	प्रभु की धरपकड की
११) वज्र शुध्धभूमि, अनार्य प्रदेश	मानवकृत क्रूर उपसर्ग
१२) पोलास चौत्स	एक ही रात में संगम देव के २० उपसर्ग
१३) छम्माणि गाव	ग्वाले ने कान में खिले ठोके वह उपसर्ग

GAME TIME!

Good habit bad habit game

Baal Mahavir story in Bioscope

Tirthankar Name Game

Gati Game

GAME TIME!

Selfie Corner

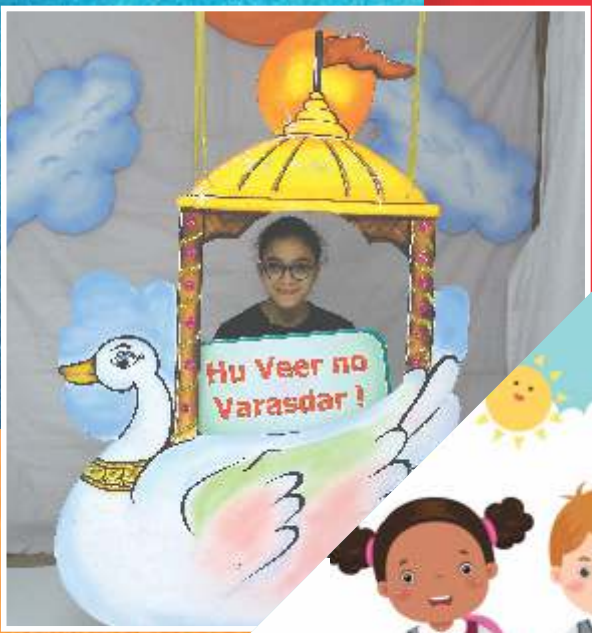

Shadow Show

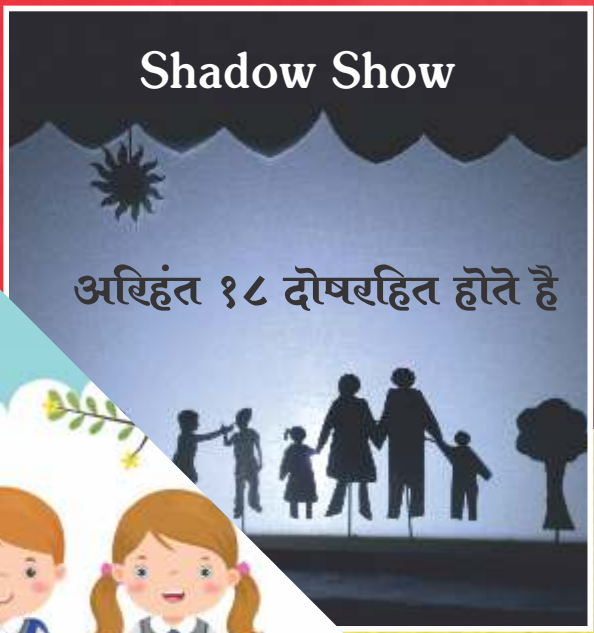

Try your luck

Per hour lucky hour

રાષ્ટ્રસંત પૂજ્ય ગુરુદેવ શ્રી નમ્રમુનિ મહારાજ સાહેબ

આદિ 36 સંત-સતીજીઓના સાંનિધ્યે

27 Aug. 2019 - 03 Aug. 2019
પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વ

31 Aug. 2019 | શનિવાર
ભગવાન મહાવીર જન્મોત્સવ

03 Sept. 2019 | મંગળવાર
સંવત્સરી મહાપર્વ

29 Sept. 2019 | રવિવાર
માનવતા મહોત્સવ

28 Oct. 2019 | સોમવાર
નૂતન વર્ષ
મહા માંગલિક

01 Nov. 2019 | શુક્રવાર
જ્ઞાન આરાધના કરવાનો અવસર
જ્ઞાન પંચમી

ગુરુઋણ સ્વીકાર અવસરે વિદાય સમારોહ - 10th Nov. 2019, રવિવાર
ચાતુર્માસ પૂર્ણાહૂતિ ચોમાસી પાક્ખી - 11th Nov. 2019, સોમવાર

tumble®
So Cute ....

New Born Baby Products

Wonderkids Metrics Pvt Ltd.
Address : 307, Ashish Udyog Bhavan, B.J. Patel Road,
Opp. SNDT College, Malad West, Mumbai - 400064
Mob : 9768077759 /
7977045129

More the Tolerance More is your Merit

Sankalp: I shall remain calm even on listening my Critisism

PARASDHAM

Missions under guidance of

Rashtrasant Pujya Gurudev Shree Namramuni Maharajsaheb

All under one roof

Parasdham
Vallabh Baugh Lane,
Tilak Road,
Ghatkopar (E),
Mumbai - 77.
Ph : 022 25015152/5354

Step towards Divinity

8657484478
Contact

Children will pray while they play

3 to 15 yrs. (Once a week)

Divine Drive

8657484481
Contact

self-introspection through self- experimentation

For all age (Everyday)

Look n Learn Magazine

022-21027676
Contact

An interactive magazine for today's child

For all ages (Every fortnight)

Shasan Prabhavak

8657484480
Contact

Awakening each Soul to reach the Goal

For all ages (Paryushan Parva)

Sambodhi & Guru Aagna Satsang

8657484483
Contact

Religious activities leading to transformation

25 to 50 yrs. (Once a week)

Soham Mahila Mandal

8657484485
Contact

Self progress through religious journey

25 yrs and above ladies (Once a week)

Arham Yuva seva Group

8657484477
Contact

Paropkar se Parmatma

15 yrs and above (Once a week)

Uvasaggahar Bhakti group

8657484486
Contact

Attain Siddhi from Sadhana

25 yrs and above (Once a week)

Arham Senior Citizen Group

9892097757
Contact

Param tiffin sahay yojana

Senior Citizen (Daily)

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 13, Issue: 12, Date: Edition of 25.07.2019, Postal Registration No. MNE/171/2018-20.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2019.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

Talking to Mahavir,

Loving Mahavir &

finally Becoming **MAHAVIR**

Inspiration:
Rashtrasant Pujya Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

Imparting a programme that suits the child of 21st century, inculcating values of *modesty, humanity & making the child a confident individual.*

Learning through creative & innovative techniques based on child psychology. A solution to deal with problems like peer pressure, time management, achieve goals & lots more...

97 centres
5000+ students
900+ didis in seva

Pray, Play, Learn & Grow together Spiritually

Contact numbers for LnI (centre heads)

Amboli	- 9833615534
Andheri (Verma Nagar)	- 9867611550
Andheri (Zalawad Nagar)	- 9820096589
Andheri (Lallubhai)	- 9820096589
Borivali	- 9320427023
Chinchpokli	- 9594951646
Dadar	- 9892840870
Dahisar	- 8369107953
Dombivali - 1 (East_Manpada)	- 9769855142
Dombivali - 2 (W)	- 9819512462
Dombivali - 3 (East_Pallava)	- 9029484850
Ghatkopar (W)	- 9769292027
Ghatkopar (W) Kalpataru	- 9769292027
Goregaon / Malad	- 9323152928
Juhu	- 9819847788
Kalyan	- 9930007201
Lokhandwala	- 9167456882
Matunga	- 9820775672
Miraroad	- 9930361216
Mulund -1	- 9664722776
Mulund- 2 (TambeNagar)	- 9967769671
Ghatkopar(E) Parasdham	- 8291025160
Kandivali(W) Pawandham	- 9619361930
Sion	- 9820259565
Tardeo	- 9821932552
Vasai	- 7303926715
Vashi	- 9819008950
Vidhya Vihar	- 9930946567
Vile Parle	- 9223318966

Look n Learn Jain Gyan Dham

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth